प्रशिक्षणार्थीयों में संस्कृत उच्चारण शुध्धि कार्यक्रम की असरकारकता का अभ्यास

डॉ. अर्चना टी. अमीन
एसोसीयेट प्राफेसर
वैद्य श्री एम.एम. पटेल कॉलेज ओफ एज्युकेशन, अहमदाबाद

१. प्रस्तावना

विश्व की समस्त भाषाओ में उच्चारण का महत्व सविशेष है । संस्कृत भाषा में शुध्ध उच्चारण आवश्यक है । संस्कृत में शुध्ध उच्चारण के महत्व को दर्शाने के लिए कहा गया है कि,

"यद्यपि बहुनाधीषेः तथापि पठ पुत्र व्याकरणम् ।
श्वजनः श्वजनों मा भूत, सकलं शकलं सकृच्छकृत ।।"

पिता पुत्र से कहते हैं कि, हे पुत्र, समग्र अध्ययन किया है, फिर भी व्याकरण सीख्र, यदि व्याकरण का ज्ञान होगा तो स्वजन और श्वजन, सकल और शकल, सकृत और शकृत इस प्रकार 'स' और 'श' वर्ण के भेद की समझ होगी ।

'स्वजन' का अर्थ आत्मीजन होता है । जबकि श्वजन का अर्थ कुत्ता होता है । सकल का अर्थ 'समग्र' होता है जबकि 'शकल' का अर्थ टुकडा होता है । इसी प्रकार 'सकृत' अर्थात् एकबार और 'शकृत' का अर्थ विपदा होता है।

संशोधन शिक्षण कॉलेज के संस्कृत विषय के अध्यापक है । वर्गखंड में उपस्थित समस्याओं से वे भलिभाँति परिचित है ! इन समस्याओं के समाधान के लिए उपरोक्त विषय पर संशोधन कार्य हाथ में लिया गया है । कोई भी भाषा जिस प्रकार बोली जाती है, उसी प्रकार लिख्री जाती है । इसीलिए प्रशिक्षणार्थीओं के उच्चारण दोष को भाषा के आरंभ से ही सुधारने की आवश्यकता होती है । प्रस्तुत संशोधन के अभ्यास हेतु और अभ्यास प्रश्न इस प्रकार है ।

२. अभ्यास के हेतु

(१) संस्कृत में उच्चारण शुद्धि के लिए निदान कसोटी की रचना करना ।
(२) संस्कृत में उच्चारण शुद्धि के संदर्भ में की हुई गलती की कमी ढूँढना ।
(३) निदान के अनुसार उपचारात्मक शिक्षण योजना की रचना करना ।
(४) उपचारात्मक शिक्षण योजना का अमल करना ।
(५) उपचारात्मक शिक्षण की असरकारकता की जाँच करना ।

३. अभ्यास प्रश्न

(१) तालीमार्थीयो संस्कृत में उच्चारण शुद्धि संदर्भ में कमी महसूस करते होंगे ?
(२) तालीमार्थीयो संस्कृत में उच्चारण में जो कमी महसूस करते होंगे उसके पीछे जवाबदार कारण कौन से होंगे ?
(३) तालीमार्थीयों के लिए किस प्रकार का उपचारात्मक शिक्षण असरकारक होगा ?
(४) तालीमार्थीयों की उच्चारण शुद्धि की कमी उपचारात्मक शिक्षण से दूर होगी ?
(५) नमूना : प्रस्तुत संशोधन में १२ तालीमार्थीयों सहेतुक नमूना पद्धति से पसंद किया गया ।

४. निदान कसोटी और उसका स्वरुप

संशोधन के लिए उच्चारण शुद्धि कार्यक्रम की निदान कसोटी की रचना दो विभागों में कि गई है । प्रथम विभाग में संस्कृत के दो परिच्छेद दिए गए है और दूसरे विभाग में संस्कृत के १५ शब्दों को उच्चारण शुद्धि के लिए पसंद किया गया ।

५. निदान कसोटी के आधार पर पृथक्करण :

नमूने के तौर पर पसंद किए गए तालीमार्थीयों को निदान कसोटी दी गई । निदान कसोटी के अमलीकरण दौरान परिच्छेद पठन और शब्दों के उच्चारण समय तालीमार्थीयों किस प्रकार की और कब गलती करते हैं उसकी नोंध की गई ।

६. उच्चारण दोष का पृथ्थकरण

प्रश्न क्रमांक	तालीमार्थीयों की संख्या	सही उत्तर देनेवालें तालीमार्थीयो की संख्या	गलत उत्तर देनेवाले तालीमार्थीयो की संख्या
विभाग-१			
१ अ	१२	६	६
१ ब	१२	५	७
विभाग-२	१२		
१		३	९
२		६	६
३		१०	२
४		५	७
५		५	७
६		४	८
७		६	६
८		७	५
९		६	६
१०		२	१०
११		३	९
१२		७	५
१३		६	६
१४		१	११
१५		१	११

इससे स्पष्ट होता है कि तालीमार्थईयों में उच्चारण शुद्धि में ज्यादा दोष पाये जाते है ।

तालीमार्थीयो की गलती का पता लगने पर मालूम हुआ कि ण, ङ, ग के वर्ण में सविशेष गलती मालूम होती है । श, ष, स के स्थान पर सिर्फ स का ही उच्चारण करते है । विसर्ग और हलन्त् के उच्चारण में गलतीयां देखने मिली । दक्षिण गुजरात के तालीमार्थियों त, थ, द, ध, न की जगह ट, ठ, ड, ढ, ण का उच्चारण करते है । 'अवग्रह' और सन्धियुक्त उच्चारण भी गलती से भरे हुए मालूम पडे । वातावरण की असर भी उच्चारण शुद्धि के लिए जिम्मेदार परिबल है । इसलिए संशोधक ने उपचारात्मक शिक्षण योजना तैयार की ।

उपचारात्मक शिक्षण योजना

तास क्रम	उपचारात्मक शिक्षण कार्य
१	उच्चारण का महत्व और वर्णमाला कोष्टक की समझ
२	सामूहिक तरीके से ५० शब्दो का उच्चारण
३	व्यक्तिगत तरीके से शब्दो का उच्चारण और मार्गदर्शन
४	परिच्छेद और शब्दों के उच्चारण का पुनरावर्तन

उच्चारण शुद्धि का उपचारात्मक कार्य तास के अनुसार वर्गीकृत करके उसके अनुसार पाठ आयोजन तैयार करके अमलीकरण किया गया ।

७. संस्कृत उच्चरण शुद्धि कसौटी का पुनः अमलीकरण :

उच्चारण शुद्धि की पूर्ण समज देने के बाद पुनः कसौटी देने में आयी और उसके फलस्वरुप जो परिणाम मिला वे इस प्रकार थे ।

प्रश्न क्रमांक	विद्यार्थीओं की संख्या	पूर्वनिदान कसौटी का परिणाम	उत्तर निदान कसौटी का परिणाम
विभाग-१			
१ अ	१२	६	१०
१ ब		५	११
विभाग-२	१२		
१		३	१०
२		६	११
३		१०	१२
४		५	१०
५		५	११
६		४	११
७		६	१२
८		७	११
९		६	१०
१०		२	१०
११		३	११
१२		७	११
१३		६	११
१४		१	१०
१५		१	१०

उपर के कोष्टक से ज्ञात होता है कि उपचारात्मक शिक्षण कार्य से विद्यार्थीओं के उच्चारण में शुद्धि परिवर्तन देखने मिलता है ।

८. अभ्यास के प्रश्ने के अनुसार विवरण

(१) सभी विद्यार्थी संस्कृत में उच्चारणशुद्धि के संदर्भ में कमी महसुस करते होंगे ?

निदान कसोटी का अमलीकरण करते हुए जाना की तालीमार्थियों की अवग्रह, विसर्ग, श, स, ष का उच्चारण और हलन्त के उच्चार में गलतीयाँ पाई गई ।

(२) विद्यार्थी संस्कृत के उच्चारण में जो कमी महसूस करते है । उसके पीछे जवाबदार कारण कौन से होंगे ?

संस्कृत के उच्चारण अशुद्धि के लिए वातावरण, मुहावरो का अभाव, भाषा शुद्धि का अभाव उच्चारण के नियमो का अभाव, अज्ञानता और शारीरिक कारणो को जिम्मेदार पाया गया है ।

(३) तालीमार्थियों के लिए किस प्रकार का उपचारात्मक शिक्षण असरकारक होगा ?

विद्यार्थीओं के वर्णमाला कोष्टक की सविशेष जानकारी देने से और विशेष मुहावरा व्यक्तिगत मार्गदर्शन देना चाहिए । इन सब बातो का उपचारात्मक शिक्षण में समाविष्ट किया गया है ।

(४) तालीमार्थियों की उच्चारणशुद्धि की कमी उपचारात्मक शिक्षण से दूर होगी ?

पूर्वनिदान कसोटी देने के बाद उपचारात्मक शिक्षण दिया गया और उसके बाद पुनः निदान कसोटी का परिणाम जो आया उसमे जो परिवर्तन पाया गया जिससे कहा जा सकता है कि उच्चारण शुद्धि की कमी उपचारात्मक शिक्षण से दूर हो सकती है ।

९. फलितार्थ

(१) तालीमार्थियों को उच्चारण के नियम की समजूती अनुस्वार और संयुक्त अक्षर के उच्चारण की विशेष तालीम देने के कारण उच्चारण शुद्धि में परिवर्तन दिखने मिलता है।
(२) तालीमार्थियों को समान ध्वनि के भेद का ज्ञान हो ।
(३) मुश्किल ध्वनि के लिए विशेष अभ्यास और मुहावरा देने से उच्चारण शुद्धि में परिवर्तन देखने मिला ।
(४) प्रोत्साहन, प्रेरणा और उपचारात्मक शिक्षा के द्वारा हकलाने और अटक के बोलने जैसे दोष में परिवर्तन पाया गया ।
(५) तालीमार्थियों में उपचारात्मक शिक्षा के द्वारा उच्चारण शुद्धि के प्रयास का परिणाम असरकारक मिला ।

१०. भविष्य के सूचन

(१) संस्कृत शिक्षक के उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो वह प्राथमिक आवश्यकता है ।
(२) शिक्षक को कक्षा में संस्कृत वाचन के दौरान एक भी गलती का स्वीकार नहि करना चाहिए । उसको सुधारने के बाद ही पठन करना चाहिए ।
(३) तालीमार्थियों को संस्कृत में मौखिक कार्य का सविशेष मुहावरा देना चाहिए ।
(४) पुनरावर्तन और स्वाध्याय पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।
(५) तालीमार्थियों के लिए सुविचार पठन सुभाषित गान, संवाद, नाटक, संस्कृत गीत जैसी स्पर्धा का आयोजन करना चाहिए ।
(६) आवश्यकता अनुसार भाषाप्रयोगशाला और टेपरेकोर्डर का भी उपयोग करना जरुरी है ।
(७) तालीमार्थियों कक्षा में भयमुक्त होकर बोल सके इस प्रकार का वातावरण खडा करना चाहिए ।

इस तरह संस्कृत शिक्षक प्रेम, सहानुभूति गंभीरता और धैर्य से प्रयत्न कर सकता है तो उच्चारण दोष का निवारण अवश्य हो सकता है ।

संदर्भसूचि

1. Siddhu K.S., (1984). Methodology of Research in Education, New Delhi : Sterling Publishers.
૨. દેસાઈ એચ.જી. અને દેસાઈ કે.જી. (૧૯૯૩); સંશોધન પધ્ધતિઓ અને પ્રવિધિઓ અમદાવાદઃ યુનિ. ગ્રંથ નિર્માણ બોર્ડ.
૩. ભગવતસિંહજી, (૧૯૮૬); ભગવદ્ગોમંડલ શબ્દકોષ ભાગ-૧
૪. શાસ્ત્રી જયેન્દ્ર દવે (૧૯૯૨); સંસ્કૃત અધ્યાપન પરિશીલન, બી.એસ. શાહ પ્રકાશન